अंक -22वां

वर्ष - 6वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, (जबलपुर), देवलाली

प्रबंध संपादक
श्रीमति स्वस्ति जैन, देवलाली

प्रकाशकीय प्रबंधक
श्री मनीष जैन 'मंगलम्', जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

तीर्थंकर के पिता कौन	1
हमारे तीर्थ	2
संपादकीय	3
कर्म का विचित्र फल	4–5
जन्म दिन	6–7
गुटखा से हानि	8
मैं भी चलूंगा	9–10
भक्तामर	11–12
कुछ इनसे सीखो	13
समाचार	14
सदस्यता/सहयोग/शिकायत	15
सिक्के	16
कॉमिक्स	17–19
मच्छर की पुकार/चहकती चेतना	20
राजा बाई क्लॉक टॉवर	21
वह कौन सा स्थान है	22
इसमें राम कहाँ हैं	23
हनुमान को वैराग्य	24
दादाजी और जैनधर्म का इतिहास	25–26
Bhagvan Mahaveer	27-29
जन्म दिवस उपहार योजना	30
अब नहीं खाऊंगा	31
सावधान	32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1000 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

तीर्थंकर के पिता कौन

नीचे 24 तीर्थंकरों के पिता के नाम नीचे बिना क्रम से लिखे हुये उन्हें क्रम से लिखें - उत्तर इसी अंक में दिये हुये हैं।

1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16
17	18	19	20
21	22	23	24

सिद्धार्थ, अश्वसेन, कुम्भ, सुमित्र, विजय, नाभिराय, सुदर्शन, कृतवर्मा, वसुपूज्य, विष्णु, दृढ़रथ, सुग्रीव, महासेन, सुप्रतिष्ठ, वरुण, सूरसेन, विश्वसेन, भानु, मेघप्रभ, संवर, जितशत्रु, जितारि, समुद्रविजय, शिवसेन

ऐतिहासिक धरोहर -

दिल्ली का ऐतिहासिक लाल मंदिर

भारत की राजधानी दिल्ली के हृदय स्थल चाँदनी चौक में लाल किले के सामने जैनों का प्रसिद्ध लाल मंदिर है।

इसका निर्माण 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुस्लिम शासक शाहजहाँ के शासनकाल में हुआ था।

यह मंदिर लाल पत्थरों से निर्मित है और अपनी सुन्दरता के लिये विख्यात है। इसका दूसरा नाम उर्दू मंदिर भी है। उर्दू का अर्थ सेना की छावनी भी होता है। इसे लश्करी मंदिर भी कहा जाता था क्योंकि यह राजा की सेना के जैन सैनिकों एवं राज्य में कार्य करने वाले अन्य जैन कर्मचारियों की पूजा-अर्चना के लिये बनाया गया था। इसे बनाने की अनुमति स्वयं बादशाह शाहजहाँ ने दी थी।

लाल मंदिर ऐतिहासिक लाल किले के सामने है और इसके समीप ही भारत का सुप्रसिद्ध पक्षियों का अस्पताल है जहां देश के अनेक भागों से पक्षी इलाज के लिये लाये जाते हैं । लाल मदिर की धर्मशाला में यात्रियों के रहने की समुचित व्यवस्था है।

हे भगवान! किन पापों का फल है ये

8. उम्र 10 वर्ष – पूरे चेहरे पर बाल –

9. उम्र 4 वर्ष – मुंह इतना बड़ा कि देखकर अज्ञानियों को हंसी आती है – ज्ञानियों को करुणा आती है।

10. हे प्रभु! अब कोई अपराध नहीं करूँगा।

11. चौंक गये इन्हें देखकर –

महाराष्ट्र के पुणे जिले के एक गांव की – तीन बहनें सविता, सावित्री और मनीषा। इन्हें 'हाईपर ट्रिकोसिस यूनिवर्सलिस डिसआर्डर' नाम की एक बीमारी है। इस बीमारी को 'वियर वुल्फ सिंड्रोम' भी कहा जाता है। एक रिसर्च के अनुसार यह बीमारी लाखों व्यक्तियों में से एक व्यक्ति को यह बीमारी होती है। इन बहनों को इस बीमारी का प्रभाव कम करने लिये एक विशेष प्रकार की क्रीम रोज अपने चेहरे पर लगाना पड़ती है। न जाने किन पापों का है यह फल।

जन्म दिवस

प्रभु का नित दर्शन करो, सफल होंय सब काम।
दर्शन से निज प्रभु मिले, पद पाओ निष्काम।
दर्शन विनायका, रतलाम म.प्र. 16.04.12

संयम जग में पूज्य है, संयम करे महान।
संयम जीवन में धरो, पाओ शिव सन्मान।।
संयम संदीप बड़जात्या रतलाम म.प्र. 20.04.12

जिज्ञासा हो धर्म की, हो आतम पहचान।
जन्म दिवस पर यही भावना मिले सदा सन्मान।
जिज्ञासा / डॉ. राजेश सोनी रतलाम म.प्र. 07.04.12

प्रथम नमो अर्हन्त को, फिर दूजा हो काम।
जन्म दिवस करो कामना, हो आतम का काम।।
प्रथम/श्री कान्तिलालजी बड़जात्या रतलाम म.प्र. 24.05.12

रिषिका आपका नाम है, करना ऐसा काम।
सीता सा आदर्श हो, श्रद्धा हो निष्काम।।
कु. रिषिका रितेश जैन जबलपुर 22.05.2012

बात प्रभु की मान लो, मानसी आपका नाम।
जन्म मरण का नाश हो, बनो सिद्ध भगवान।।
मानसी –विनोद जैन उदयपुर 09.06.12

देव-शास्त्र-गुरू की विनय, प्रथम हमारा काम।
मेहुल इनको नमन करो, फिर दूजा हो काम।।

मेहुल -अजीत जैन उदयपुर राज.24.06.12

अन्वय जीवन में करो, सत्संगति महान।
जैनधर्म मंगल मिला, हो संसार अवसान।।

अन्वय / नितेश अजमेरा,रतलाम 20.06.12

क्षितिज आपका नाम है, हो जिनधर्म संतान।
जन्म-मरण का नाशकर, बनो स्वयं भगवान।।

क्षितिज जैन 07.02.12

जग में ख्याति पाइये, कीजे धर्म के काम।
यही भावना जन्म दिवस पर, मिले मुक्ति विश्राम।

ख्याति बड़जात्या 26.02.12

जिनवाणी का दिया हो, ज्ञान ज्योति सुखकार।
सीता सा आदर्श हो, पाओ प्यार-दुलार।।

दिया जैन 05.03.12

अक्षत सा शुभ नाम है, अक्षत आतम रूप।
बड़ेजनों का सन्मान कर, पायें सौख्य अनूप।।

अक्षत जैन 20.03.12

महावीर के वंश हो है गौरवमय यह बात।
शाश्वत अपना सिद्ध पद, चलो सिद्धों के पास।।

शाश्वत पाटनी 25.03.12

करनी का ही फल सदा, भोगे सारा लोक।
ऐसी कृति रचाइये, मिटे जन्म का रोग।।

कृति शाह 12.03.12

गुटखा, तम्बाकू आदि का नशा करने वालों सावधान -

क्या आपका भविष्य ऐसा है ?

मैं भी चलूँगा

– गगन ! तुम कल सुबह जल्दी आ जाना।

– क्यों? कल कोई खास बात है?

– हाँ ! अपने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जंयती का दिन है। कल मंदिर में पूजन है और पूजन के बाद विशाल शोभायात्रा निकलेगी।

– अरे निशंक भाई! तो इसमें मेरा क्या काम है?

– गगन ! इसमें काम की क्या बात है? ये तो हमारा कर्तव्य है। हमारे भगवान महावीर का जन्मजयंती महोत्सव है और इसमें हमें उत्साह से भाग लेना चाहिये।

– लेकिन निशंक भाई! कल मुझे बहुत सारे काम हैंऔर पूजन में मुझे बहुत बोर लगता है और शोभायात्रा में जाने से क्या फायदा ? कितनी भीड़ होती है और सारे कपड़े गंदे हो जाते हैं। बस चलते रहो, चलते रहो बहुत थकान हो जाती है।

– अरे गगन ! तुम कैसी बातें कर रहे हो? ये तो हमारा सौभाग्य है कि हमें इस जन्म जयंती के कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

– छोड़ो ये सब बेकार की बातें------।

– अच्छा ! तुम ये बताओ कि तुम पढ़ाई करके क्या करना चाहते हो ?

– मैं डॉक्टर बनकर बहुत सारे रुपये कमाना चाहता हूँ और अपने पिता का नाम रोशन करना चाहता हूँ।

– क्यों ?

– अरे मेरे पिताजी ने मुझे जन्म दिया और मेरा बहुत ध्यान रखते हैं। मेरी पढ़ाई के लिये बहुत रुपया खर्च करते हैं।

– तुम्हें अपने पिताजी की बहुत महिमा आ रही है ना। ऐसे ही भगवान महावीर हमारे धर्म पिता हैं। उन्होंने हमें सच्चे धर्म की शिक्षा दी। तुम डाक्टर बन जाओगे तो इस जन्म में सुख–सुविधायें भोग पाओगे। लेकिन भगवान महावीर ने हमें अनंत जन्मों तक सुखी होने का मार्ग बताया है। जन्म–मरण का अंत करने का मार्ग बताया है। हम पर उनका अनंत उपकार है। कुछ समझ में आया।

– हाँ! कुछ–कुछ आ रहा है।

– तुम डॉक्टर बनने के लिये और पापा का नाम रोशन करने के लिये हर संघर्ष करने के लिये तैयार हो परंतु जिनधर्म की प्रभावना के लिये जन्म जयंती की शोभायात्रा में जाने के लिये तुम मना कर रहे हो।

– शोभायात्रा में इतना खर्च होता है यह सब ठीक है क्या?

– हम अपने परिवार में होने वाले विवाह, जन्मदिन आदि में खर्च करते समय कुछ सोचते हैं क्या ? पार्टी, पिकनिक में कितना रुपया खर्च करते हैं तब हम खर्च का विचार नहीं करते तो जिनधर्म की प्रभावना में तो खर्च की बात ही नहीं करना चाहिये। जिस जन्म कल्याणक को मनाने के लिये स्वयं सौधर्म इन्द्र आते हैं, कुबेर रत्नों की वर्षा करता है और तुम खर्च की बात कर रहे हो!

– पर निशंक भाई!

– पर क्या गगन ?अरे जिस धर्म के प्रचार के लिये निकलंक ने अपने प्राण गंवा दिये, पण्डित टोडरमलजी ने हाथी के पैर के नीचे अपने जान गंवा दी और हमने इस धर्म के लिये क्या किया ?

– सॉरी निशंक भाई ! मैं अज्ञानता में ऐसी बात कर रहा था और मैं इसके लिये बहुत शर्मिंदा हूँ। अब आगे से ऐसी गल्ती नहीं करूँगा और मेरे जीवन में जितना हो सकेगा स्वयं जैन धर्म का पालन का करूँगा और प्रचार भी करूँगा।

– वाह गगन! ये हुई ना बात। तो फिर कल सुबह ----------

– जल्दी मंदिर पहुँच जाऊँगा।

– विराग शास्त्री

भक्तामर स्तोत

रचनाकार – आचार्य मानतुंग स्वामी, अनुवादक – स्व. श्री चक्रेश्वर कुमार गर्ग, नकुड़ जि. सहारनपुर उ.प्र.

इसके पूर्व के अंकों में आप 30 काव्यछंदों का अनुवाद पढ़ चुके हैं अब आगे –

31

तीन छत्र सोहत हैं सिर पर, तेरे निशि–दिन हे शशिकान्त।
अगणित मुक्ता जिनमें हैं, भांति–भांति के निर्मल कान्त।
सूर्य प्रताप को उच्च स्थित हो, आच्छादित करते हो नाथ।
तीन छत्र यह बतलाते हैं, तीन जगत का है तू नाथ।

Three gold umbrellas above thee,
Dim sun's brightness, seated high,
Pearl – chains hanging from them proclaim,
Thy lordship over three words.

32

नक्कारा करमा है नभ में निश वासर गम्भीर निमदि।
चहुं दिश में भरत है तेरे यश की दिव्य ध्वनि।
तीन जगत में सत्संगति की महिमा को फैलाता है।
शिवपथ नायक जिनवर की वह जय जयकार सुनाता है।

The drum, in loud sonorous nots,
Fills atmosphere with thy praise,
Points out the path to salvation,
And proclaims Truth's Victory.

33

स्वर्ग विकुन्ज से मन्दरादिक वृक्षों के चुन पुष्प अनूप।
भक्तदेवगण बरसाते हैं तुझ पर हर्ष, हे त्रिजग भूप।
मन्द समीर सुगन्धित बूंदें जल को बरसाती हैं।
मानो जिनवाणी की वर्षा देव लोक से आती हैं।

Various 'Kalp-tress pouring flowers,
And morning breeze, ' Gandhodek',
It looks, thy prcepts from heaven,
Are raining on earth below.

34

लक्ष सूर्य की ज्योति प्रखर हो जाये मंद मण्डल से।
द्युतिवंत सब तीन जगत के अस्त होत भामंडल से।
तिस पर सोहती है, तुझ में शीतलता वह दीना नाथ।
शर्म से मेघाश्रित हो जाता तुझे देख वह रजनी - नाथ।

All that is lustrous in three worlds,
Has surpassed thy ourcole,
Though brlliant like a million suns,
Yet Thou art cooler than moon.

35

स्वर्ग मोक्ष पथ की द्योतक ध्वनि तेरी मेरे भगवन।
निपुण धर्म तत्वों के कथन में एक मात्र तू ही भगवन।
ऐसी भाषा में खिरती है वाणी तेरी शिवदायक।
अर्थ समझ लेता है अपनी-अपनी भाषा में हर एक।

Guide to Heaven and Salvation,
Is thy Voice Divine,
Expert in propunding the truth,
So expressive, follow all.

36

स्वर्ण पद्म है नूतन विकसित, चरण तेरे नख से शोभित।
पूर्ण चन्द्र की ज्योति है इनमें, तेरे नख से हैं अनुपमकांत।
जहाँ कहीं रखते हो जिनवर अपने सुन्दर चरण कमल।
शुभ्र छटा की कल्पना उनकी कर आ रचते देव कमल।।

Golden lotus- like are thy nails.
Beautiful lustrous are they,
Where thou layest thy feet,
With new lotus worship gods.

शेष अगले अंक में...

कुछ इनसे सीखो

यदि भावना पवित्र हो तो कोई भी काम असंभव नहीं होता। अधिकांश बच्चे और उनके माता - पिता पढ़ाई और काम की व्यस्तता का बहाना देकर कहते हैं कि 'हम तो चाहते हैं कि रोज मंदिर जायें और जैनधर्म के सदाचार सम्बन्धी नियमों को पालें, लेकिन क्या करें कर नहीं पाते।' उन सबके लिये धैर्य और ध्रुव एक आदर्श हैं। मध्यप्रदेश के निमाड़ क्षेत्र के सनावद नगर में रहने वाले इन दो जुड़वां भाइयों का जैनधर्म के प्रति बहुत प्रेम है। दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले 7 वर्षीय इन दोनों भाईयों का स्कूल समय सुबह 6.30 है। स्कूल घर से बहुत दूर है, परन्तु चाहे कोई भी मौसम हो ये पहले जिनमंदिर अवश्य जाते हैं।

इन्होंने स्वयं ही एक नियम बॉक्स बनाया है। इस बॉक्स में लगभग 30 नियमों की पर्ची है। जैसे-आज मैं सुबह और शाम दो बार जिनमंदिर जाऊँगा, आज मैं बाजार का कुछ भी नहीं खाऊँगा, आज मैं गुस्सा नहीं करूँगा, आज मैं जिद नहीं करूँगा, आज मैं रात्रि को कोई स्तुति या भजन पढ़कर ही सोऊँगा आदि। प्रतिदिन स्कूल जाने से पहले ये दोनों भाई उस बॉक्स में से एक पर्ची निकालकर एक नियम लेते हैं और उस दिन उस नियम का पालन करते हैं। आप इन से कुछ सीख ले सकते हैं। ये दोनों भाई किसी प्रकार के आलू - प्याज आदि जमीकंद जैसी अभक्ष्य नहीं खाते और आपस में बहुत प्रेम से रहते हैं। आप सब भी इनसे सीखें कि मन में भी सच्ची भावना हो तो हर काम आसान है।

चार नई वीडियो सी.डी. का विमोचन

बाल एवं किशोर वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों को समाहित करने के उद्देश्य से आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर ने नई चार नई सी.डी. तैयार की हैं। इन चारों सी.डी. का विमोचन जयपुर में आयोजित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर किया गया।

पाठशाला चलें हम – ग्यारहवें पुष्प के रूप में "पाठशाला चलें हम" तैयार की गई है। इस सी.डी. में 13 नये गीतों का संकलन है। इस वीडियो की शूटिंग दाहोद, चैतन्यधाम, अहमदाबाद, जबलपुर और मुम्बई में की गई है।

तुम्हें वीर बनना है – बारहवें पुष्प के रूप में सुपर हिट् बाल गीतों का संकलन "तुम्हें वीर बनना है" के नाम से किया गया है। इस डी.वी.डी. में पुराने वीडियो के 20 सुपर हिट बाल गीतों को संकलित किया गया है जिससे लोकप्रिय बाल गीतों का एक ही डी.वी.डी. में आनंद ले सकें।

आओ सीखें जैन धर्म – तेरहवें पुष्प के रूप में "आओ सीखें जैन धर्म" के नाम से वीडियो तैयार किया गया है। इस सी.डी. में नवदेवताओं और तीर्थंकरों का परिचय कक्षा के रूप में रोचक रूप से प्रस्तुत किया है। साथ ही सभी के सम्बन्धित गीतों का समावेश किया है। इसकी शूटिंग पिसनहारी की मढ़िया जबलपुर में की गई है। इस सी.डी. में पुण्य जैन – प्रेक्षा जैन हस्ते श्रीमति रीना प्रशांत जैन दिल्ली का मुख्य आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

शेर बना महावीर – चौदहवें पुष्प के रूप में "शेर बना महावीर" नामक सी.डी. का निर्माण किया गया है। इसमें भगवान महावीर की शेर की पूर्व पर्याय की घटना को मुख्यता से एनीमेशन के रूप में प्रदर्शित किया है। नये और अनोखे रूप में प्रस्तुत इस सी.डी. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई है। साथ में इसकी रंगीन चित्र सहित पुस्तक का प्रकाशन भी किया गया है। अंग्रेजी अनुवाद श्री रजनीकान्त गोसलिया, अमेरिका द्वारा किया गया है। इस सी.डी. में अमेरिका की जैन संस्था मोना के सदस्यों का एवं श्री मितेशभाई बखारिया, दादर, मुम्बई का सहयोग प्राप्त हुआ है।

इन समस्त सी.डी. का निर्माण श्री विराग शास्त्री के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ है। इन सी.डी. को डाक से प्राप्त करने के लिये आप हमसे संपर्क करें।

चहकती चेतना के अनेक नवीन सदस्य बने

चहकती चेतना के लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती जा रही है। जिसके फलस्वरूप इसके सदस्यों में लगातार वृद्धि होती जा रही है। जयपुर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत लगभग 100 नवीन सदस्य बने।

आगामी बाल शिविर

25 अप्रेल से 02 मई 2012 - बाल संस्कार शिविर, देवलाली
01 मई से 8 मई 2012 - बाल संस्कार शिविर, जबलपुर म.प्र.

सहयोग प्राप्त

5100/– श्री भागचंदजी कालिका, उदयपुर की ओर से संस्था को सहायक सदस्य के रूप में प्राप्त।
5000/– श्री सेवंती भाई गांधी, वस्त्रापुर, अहमदाबाद की ओर से संस्था सीडी निर्माण में प्राप्त।
5000/– श्री राजकुमारजी अजमेरा, रतलाम (सहायक सदस्य के रूप में प्राप्त)

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1 लाख रूपये
परम संरक्षक	–	51 हजार रूपये
संरक्षक	–	31 हजार रूपये
परम सहायक	–	21 हजार रूपये
सहायक	–	11 हजार रूपये
सहायक सदस्य	–	5 हजार रूपये
सदस्य	–	1000/–

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि.जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें। आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं।

ध्यान दें

जिन सदस्यों की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है उन्हें अगले अंक से पत्रिका भेजना संभव नहीं होगा। हम सदस्यता समाप्त होने पर आपको पत्र भेजकर सूचित करते हैं फिर भी किसी कारणवश आपको पत्र न मिले तो आप स्वयं ही सदस्यता शुल्क जमा करा देवें।

1. सदस्यता राशि 400 रू. (तीन वर्ष हेतु) अथवा 1000 रू. (दस वर्ष हेतु) आप चहकती चेतना के नाम से मनीआर्डर/ ड्राफ्ट भेजें अथवा आप हमारे पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101030106 में जमा करके सूचित करें। मनीआर्डर भेजते समय संदेश के स्थान पर अपना पूरा पता फोन नं. अवश्य लिखें।
   हमारा पता – चहकती चेतना – सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र. मो. 9373294684 पर भेजें। चैक मान्य नहीं होंगे।
2. जिन सदस्यों को चहकती चेतना नहीं मिलती अथवा नियमित रूप से नहीं मिल रही है वे कृपया अपनी शिकायत अवश्य भेजें। हमारे पास कुछ पत्रिकायें पूरा पता न होने से वापस आ रहीं हैं। आप अपनी शिकायत हमारे मोबाइल नम्बर 9373294684 पर एस.एम.एस. भी कर सकते हैं।
3. संपर्क करते समय कृपया अपना सदस्यता कमांक अवश्य लिखें।

आजादी के पहले के जैन सिक्के

भारत की स्वतंत्रता अर्थात् के पूर्व अंग्रेज कंपनी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जैन धर्म से सम्बन्धित जारी किये सिक्के

1. भगवान महावीर और जैन तीर्थ पालीताणा

2. सन् 1818 में जारी भगवान पार्श्वनाथ की मुद्रा वाला सिक्का

3. सन् 1616 में जारी भगवान महावीर की मुद्रा वाला सिक्का

4. भगवान महावीर के निर्वाण के 2600 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में नेपाल सरकार द्वारा जारी किया गया सिक्का।

पृष्ठ क्र 1 के उत्तर

तीर्थंकरों के पिता के नाम पहेली के उत्तर -

1. नाभिराय	2. जितशत्रु	3. जितारि	4.संवर 5. मेघप्रभ
6. धरण	7. सुप्रतिष्ठ	8. महासेन	9.सुग्रीव
10. दृढ़रथ	11.विष्णु	12.वसुपूज्य	13.कृतवर्मा
14. शिवसेन	15.भान	16.विश्वसेन	17.सूरसेन
18. सुदर्शन	19.कुम्भ	20.सुमित्र	21.विजय
22. समुद्रविजय	23.अश्वसेन	24.सिद्धार्थ	

सच्चा त्याग

भव्यों! उत्तम त्याग धर्म के पालन से संसार समुद्र भी पार किया जा सकता है। तभी तो शास्त्रों में त्याग धर्म की अपार महिमा गाई है।
महाराज! अगर हम रुपये पैसे का त्याग कर दें तो एक दिन भी काम न चले त्याग कैसे किया जा सकता है।
एक दिन वह पंडित जी नदी किनारे पहुंचे और...
महाराज मैं ग़रीब मल्लाह हूं। अगर मैं फोकट में ही लोगों को पार पहुंचाता रहूं तो मेरी गृहस्थी कैसे चलेगी?
भैया! हमें नदी के उस पार जाना है। पैसे हमारे पास हैं नहीं। अगर तुम हमें उस पार पहुंचा दो तो बड़ी कृपा होगी।
इतने में आ गए सेठ जी...
अजी पंडित जी यहां क्यों खड़े हो? क्या बात है?
सेठ जी! बात तो कुछ भी नहीं। हमें नदी के उस पार जाना है। यह नाविक बिना पैसे लिये नाव में बिठाता ही नहीं। और पैसे हमारे पास हैं नहीं। हम सोच रहे हैं उस पार न सही। चलो इसी पार सामायिक कर लेंगे।

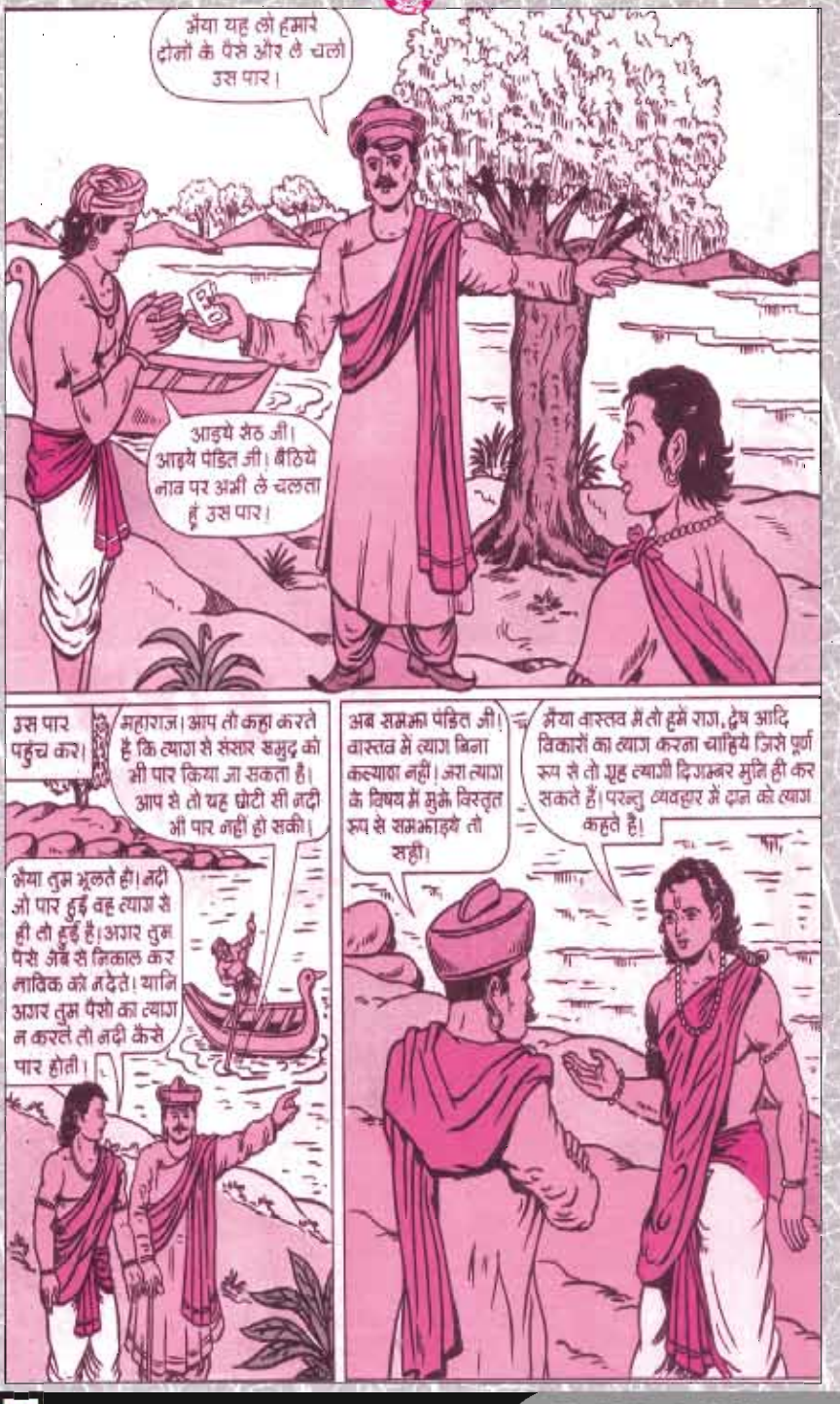
भैया यह लो हमारे दोनों के पैसे और ले चलो उस पार।
आइये सेठ जी। आइये पंडित जी। बैठिये नाव पर अभी ले चलता हूं उस पार।
उस पार पहुंच कर।
महाराज। आप तो कहा करते हैं कि त्याग से संसार समुद्र को भी पार किया जा सकता है। आप से तो यह छोटी सी नदी भी पार नहीं हो सकी।
भैया तुम भूलते हो। नदी जो पार हुई वह त्याग से ही तो हुई है। अगर तुम पैसे अभी से निकाल कर नाविक को न देते। यानि अगर तुम पैसों का त्याग न करते तो नदी कैसे पार होती।
अब शर्मा पंडित जी। वास्तव में त्याग बिना कल्याण नहीं। अरा त्याग के विषय में मुझे विस्तृत रूप से समझाइये तो सही।
भैया वास्तव में तो हमें राग, द्वेष आदि विकारों का त्याग करना चाहिये जिसे पूर्ण रूप से तो गृह त्यागी दिगम्बर मुनि ही कर सकते हैं। परन्तु व्यवहार में दान को त्याग कहते हैं।

पंडित धानत राय जी ने इस बात को कितने सुन्दर ढंग से कहा है:-

" धनि साधु शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को,
" बिन दान श्रावक साधु दोनों लै हैं नाहिं बोध को।"

१. यार! आज फिर मरते - मरते बचे।
२. हाँ दोस्त ! हमारे कई दोस्त मर गये।
१. हम तो इन मनुष्यों का पूरी एक बूंद भी खून नहीं पी पाते।
पर ये निर्दयी हमारी हत्या ही करना चाहते हैं।
२. हाँ! काश इन्हें सद्‌बुद्धि आये कि ये जहरीले
ऑल आउट उपयोग करने के बदले मच्छरदानी का उपयोग करें।

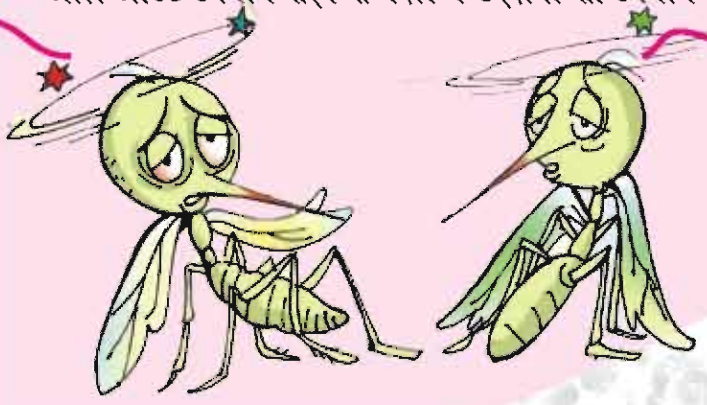

चहकती चेतना

चम चम चमके ज्ञान की ज्योति
हम में है भगवान बनने की शक्ति
करलो निज आतम से प्रीति
तीन रतन की होगी प्राप्ति
चेतन की हो गई अनुभूति
तन से भिन्न हुई अब परिणति
ना होगा अब भ्रमण चार गति

- श्वेता मेहता, वसई, मुम्बई

राजा बाई क्लॉक टॉवर

राजाबाई क्लॉक टॉवर मुम्बई विश्वविद्यालय परिसर में स्थित एक घड़ी टॉवर है।

इस टॉवर की ऊँचाई 280 फुट है। इसका निर्माण 1878 में 2 लाख रूपये की लागत से बनाया गया है।

इसे प्रेमचन्द रायचन्द जैन ने अपनी माँ राजाबाई के नाम से उनके लिये ही बनवाया था। जिससे वे बिना किसी की सहायता से अपना कार्य समय पर कर सकें।

राजा बाई जन्म से अंधी थीं और जैन धर्म की दृढ़ श्रद्धानी थीं।

इस टॉवर में प्रत्येक घंटे में बजने वाले घंटे से उन्हें समय का पता चल जाता था, जिससे वे रात्रि होने के 48 मिनिट पूर्व भोजन कर लेतीं थीं।

वह कौन सा स्थान है ?

1. वह कौन सा स्थान है जहाँ पर 700 मुनिराजों पर उपसर्ग हुआ था ?

उत्तर – हस्तिनापुर।

2. वह कौन सा स्थान है जहाँ चन्दनबाला ने मुनि महावीर का आहार के लिये पड़गाहा था ?

उत्तर – कौशाम्बी ।

3. वह कौन सा स्थान है जिसे बुन्देलखण्ड का लघु सम्मेदशिखर कहा जाता है ?

उत्तर – द्रोणगिरि । (यह मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में है।)

4. वह कौन सा स्थान है जहाँ सूर्य – चन्द्रमा नहीं होते ?

उत्तर – स्वर्ग / नरक / सिद्धशिला ।

5. वह कौन सा स्थान है जहाँ से श्रीधर केवली मोक्ष गये हैं ?

उत्तर – कुण्डलपुर (यह मध्यप्रदेश के दमोह जिले में है।)।

6. वह कौन सा स्थान है जहाँ के मानस्तम्भ में पण्डित टोडरमलजी की प्रतिमा उत्कीर्ण की गई है ?

उत्तर – मोराजी, सागर म.प्र.।

7. वह कौन सा स्थान है जहाँ पार्श्वनाथ मुनिराज का प्रथम आहार हुआ था ?

उत्तर – गजपुर ।

8. वह कौन सा स्थान है जहाँ से सात बलभद्र मोक्ष गये हैं ?

उत्तर – गजपंथा (नासिक) ।

9. वह कौन सा तीर्थस्थान है जिसका पुराना नाम मदनेशपुर है ?

उत्तर – आहारजी ।

10. वह कौन सा स्थान है जहाँ एक बुढ़िया ने गेहूँ पीसकर धन कमाया और जिनमंदिर का निर्माण कराया ?

उत्तर – पिसनहारी की मढ़िया (जबलपुर)।

11. वह कौन सा स्थान है जहाँ राम और हनुमान की भेंट हुई थी ?

उत्तर – पंपापुर (पपौराजी)।

12. वह कौनसा सिद्धक्षेत्र है जहाँ पर 99 जिनमंदिर, 99 बावड़ी और 99 तालाब थे ?

उत्तर – ऊन (पावागिरी) ।

इसमें राम कहाँ है

जब राजा राम रावण पर विजय प्राप्त कर लौटे तो कुछ दिन बाद एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया। सभा में राम अपनी पत्नी सीता के साथ विराजमान थे तथा राजसभा के सभी सदस्यगण बैठे हुये थे। लंका से लौटे हुये सभी लोग लंका के अपने अनुभवों का बता रहे थे। सभी लोगों ने हनुमान की वीरता की बहुत प्रशंसा की। सीता भी हनुमान के शौर्य से प्रभावित थीं। सभा के अंत राम ने सभी को पुरस्कार दिये और हनुमान को अपने गले से निकालकर बहुमूल्य मोतियों की एक माला दी। सभी सदस्यगण उस माला को देखकर वाह – वाह कर रहे थे। माला पाकर हनुमान वहाँ चले गये और एक कोने में जाकर एक–एक मोती को दांत से काटकर देखते और फेक देते। इस तरह उन्होंने लगभग सारे मोती दांतों से काटकर फेंक दिये। हनुमान को विचित्र व्यवहार पर एक मंत्री को आश्चर्य और दुःख हुआ। वह तुरन्त राजा राम के पास गया और बोला – महाराज! हनुमान तो पागल हो गया है। आपने इतने सम्मान के साथ इतनी बहुमूल्य माला दी और उसने सारे मोती दांतों से काटकर फेंक दिये।

राम ने तुरन्त हनुमान को बुलाकर इसका कारण पूछा तो हनुमान ने बहुत सरलता से कहा कि मैं तो उसमें राम खोज रहा था। परन्तु सारे मोती मैंने काटकर देखे उसमें कहीं राम नहीं मिले। मैंने तो राम की भक्ति की थी, मोतियों की नहीं। आपके सामने तो मोती मेरे लिये धूल के समान हैं।

हनुमान का यह उत्तर सुनकर राम ने उसे गले से लगा लिया।

ऐसे ही आत्मा को प्राप्त करने वाला जीव अपने प्रत्येक कार्य में आत्मा की मुख्यता रखता है। जिस कार्य में आत्मा का हित न हो उसे वह नहीं करना चाहता क्योंकि आत्मा से प्रेम है, परिग्रह और भोगों से नहीं। परिग्रह भोग तो उसके लिये धूल के समान हैं।

हनुमान को वैराग्य

अनेक वर्षों बाद हनुमान अनंग कुसुम आदि रानियों के साथ अकृत्रिम चैत्यालयों की वन्दना करने गये। सुमेरू की प्रदक्षिणा करके जब वे वापस लौटने लगे, संध्या हो जाने के कारण वे सुरदुन्दुभी नाम के पर्वत पर रात्रि विश्राम करने लगे। रात्रि में उन्होंने आकाश से एक तारा टूटता हुआ देखा। उसे देखकर विचार करने लगे – हाय! इस संसार में कोई नहीं जो मृत्यु से बच सके। यह जीव अनन्त काल से दुःख को भोग रहा है और परिवार और परिग्रह के मोह में मगन रहता है और मृत्यु आने पर हाय हाय करता हुआ चार गति मेंदुःख भोगता है। परन्तु मैं जिनेन्द्र भगवान के मार्ग पर चलकर सिद्ध पद धारण करूँगा।

सुबह होने पर हनुमान अपनी मुनि दीक्षा लेने की भावना अपने मंत्रियों और पत्नियों को बताई। सभी ने आग्रह किया कि हम आपके बिना अनाथ हो जायेंगे, आप दीक्षा न लें। रानियाँ रोते हुये उनके चरणों में गिर गईं। तब हनुमान ने सभी संसार का स्वरूप बताकर कहा कि यदि आप मुझे आत्मकल्याण करने से रोकेंगे तो आप सब मेरे शत्रु के समान हैं। इसके बाद हनुमान अपने बड़े पुत्र को राज्य देकर महल से बाहर निकल गये और समीप के चैत्यवन में जाकर मुनि दीक्षा धारण की। उनके साथ 750 राजाओं ने भी मुनि दीक्षा धारण की। यह देखकर रानियों ने भी आत्मकल्याण करने का निश्चय किया और बन्धुमति आर्यिका के पास जाकर आर्यिका व्रत अंगीकार किये। महामुनि हनुमान ने अपूर्व तप किया और तुंगीगिरि पर्वत से मोक्ष पद प्राप्त किया।

संसारके भोगोंसे विरक्त हनुमानजी मुनिदीक्षा अंगीकार करते हैं तथा उनकी रानियाँ भी आर्यिका धर्म अंगीकार करती हैं।

जैनधर्म का इतिहास

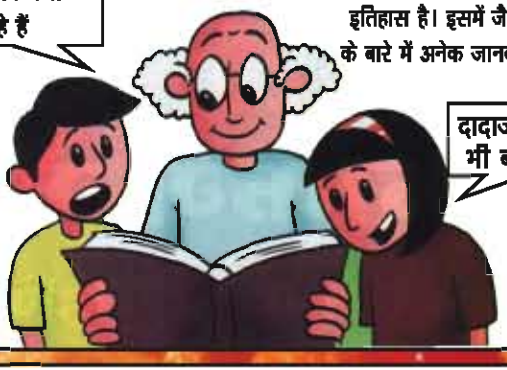
दादाजी आप क्या पढ़ रहे हैं
बेटा इस पुस्तक का नाम जैनधर्म का इतिहास है। इसमें जैनधर्म के इतिहास के बारे में अनेक जानकारियाँ दी गई हैं।
दादाजी! कुछ हमें भी बताइये ना।

कुछ खास बातें बताता हूँ। सम्राट चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने जैन आचार्य भद्रबाहु से मुनि दीक्षा ली थी और समाधिमरणपूर्वक देह का त्याग किया था।
कमाल है। हम तो कुछ और ही समझते थे।

दादाजी! यह सुनकर तो आश्चर्य हो रहा है।
हाँ! अंडमान-निकोबार द्वीप का मूल नाम आत्मन्-नग्गावर है।

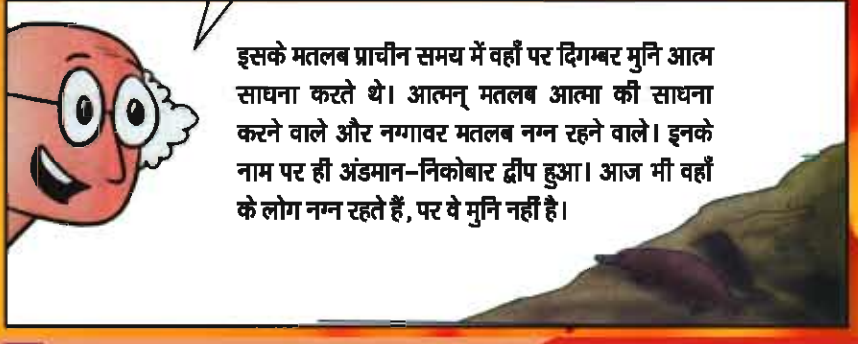
इसके मतलब प्राचीन समय में वहाँ पर दिगम्बर मुनि आत्म साधना करते थे। आत्मन् मतलब आत्मा की साधना करने वाले और नग्गावर मतलब नग्न रहने वाले। इनके नाम पर ही अंडमान-निकोबार द्वीप हुआ। आज भी वहाँ के लोग नग्न रहते हैं, पर वे मुनि नहीं है।

पर बेटा! ये ही सच है। टी.के चौपड़े नाम के लेखक ईसा मसीह के 1000 वर्ष पूर्व में विश्व में 40 करोड़ जैन थे। ईसा मसीह के 500 वर्ष पूर्व में 25 करोड़ जैन थे। सन् 815 में 20 करोड़ जैन थे, सन् 1173 में 11 करोड़ और अकबर बादशाह के समय में 4 करोड़ जैन थे।

डॉ. वीरसागर जैन दिल्ली से प्राप्त जानकारी के अनुसार

शेर बना महावीर

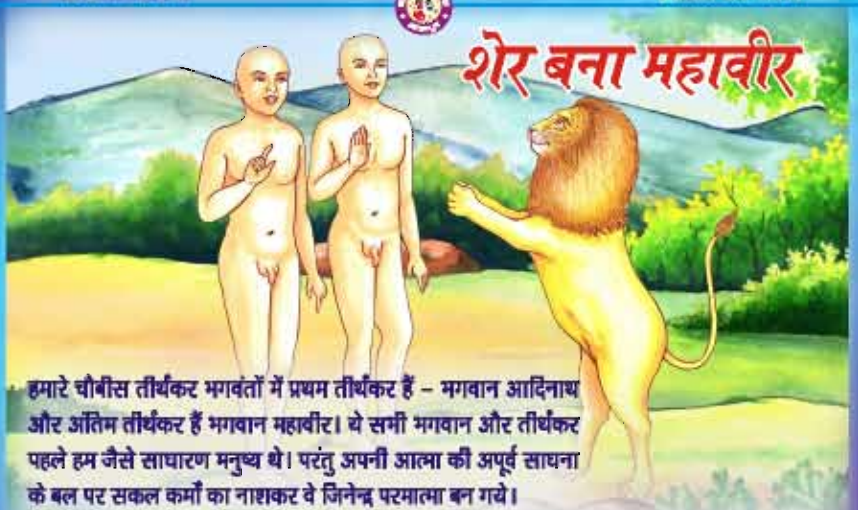

हमारे चौबीस तीर्थंकर भगवंतों में प्रथम तीर्थंकर हैं – भगवान आदिनाथ और अंतिम तीर्थंकर हैं भगवान महावीर। ये सभी भगवान और तीर्थंकर पहले हम जैसे साधारण मनुष्य थे। परंतु अपनी आत्मा की अपूर्व साधना के बल पर सकल कर्मों का नाशकर वे जिनेन्द्र परमात्मा बन गये।

आइये जानें - चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की भगवान बनने की कथा

महावीर भगवान अरहंत बनने के दस भव पहले एक शेर की पर्याय में थे। जंगल का राजा शेर। जिसको देखकर जंगल के अन्य जानवर अपनी जान बचाने के लिये तेजी से भागते थे। जिसकी दहाड़ सुनकर दिल दहल जाता था। वह शेर था ही इतना विशाल और खतरनाक। एक दिन की बात है वह जंगल का राजा शेर पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। तभी उसने एक हिरण को वहाँ से जाते हुये देखा। हिरण को देखकर उसे मारकर खाने की इच्छा हुई वह सोचने लगा – ''वाह! आज बहुत दिन बाद मोटा शिकार सामने दिख रहा है। आज इसे खाकर अपनी भूख शांत करूँगा'' और शेर अपने आगे के पैरों पर खड़ा हो गया। बेचारे हिरण को तो पता ही नहीं था कि उसकी मौत उसके पास आ रही है। अचानक ..... हिरण ने आहट पाकर पीछे मुड़कर देखा और.... घबराकर अपनी जान बचाने के लिये तेजी से भागा। हिरण को भागता देखकर शेर भी उसे मारने के लिये उसकी ओर झपटा। आगे हिरण पीछे शेर। आगे हिरण पीछे शेर। भागता रहा भागता रहा – ..... परंतु यह क्या हुआ ....? शेर ने तेजी से भागकर हिरण पर हमला कर दिया, हिरण की दयनीय मुद्रा देखकर भी शेर को दया नहीं आई। मानों हिरण शेर से कह रहा हो कि ''मुझे मत मारो! मत मारो मुझे। मुझे जाने दो। मेरे प्राण मत छीनो'' मगर शेर ने उसके भयभीत चेहरे पर और आंसुओं ध्यान ही नहीं दिया और अपने बड़े-बड़े और नुकीले नाखूनों से हिरण की गर्दन पकड़ ली और उस हिरण की मृत्यु हो गई। शेर ने हिरण का मांस खाना प्रारंभ कर दिया।

उसी समय अमितकीर्ति और अमितप्रभ नाम के दो मुनिराज वहाँ आकाश मार्ग से विहार कर रहे थे, उन्होंने नीचे देखा – ''अरे यह क्या ? वह शेर हिरण को कितनी निर्दयता से मारकर आनंद से उसका मांस खा रहा है। इस संसार का यही स्वरूप है कि बलवान सदैव निर्बल का घात करता है।'' दोनों मुनिराज नीचे उतरकर शेर के पास आये। अरे

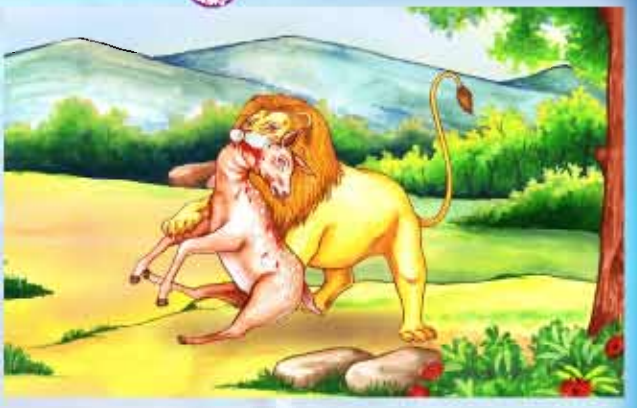

आश्चर्य हो गया .... .. शेर ने दोनों मुनिराजों की परम शांत मुद्रा देखी और उसका मांस खाना बंद हो गया..... .....वह बिना पलक झपकाये मुनिराज को देख रहा था। सोचने लगा – ''अहो! इतना शांत रूप मैंने आज तक नहीं देखा और मेरे परिणाम शांत क्यों हो रहे हैं ? '' मुनिराज ने शेर का सुन्दर भविष्य जानकर उसे उपदेश दिया। '' हे मृगराज! तुम ये क्या कर रहे हो ? अनंत बार तुमने जन्म–मरण की पीड़ा सहन की है। अनेकों बार तुमने अपने से कमजोर प्राणियों का घात किया है और तुम भी अपने से बलवान प्राणियों का शिकार बने हो। अब बस करो! मोक्ष तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। जागो मृगराज जागो! अब तुम्हारे जन्म–मरण का अंत निकट आ गया है। तुम्हें ये कार्य शोभा नहीं देता। तुम निकट भव्य जीव हो और दस भव के बाद इसी भरत क्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर बनने वाले हो। तुम्हारे कारण से अनेक भव्य जीव आत्मकल्याण करेंगे और तुम्हारे निमित्त से जिनशासन की अद्‌भुत प्रभावना होगी।''

ऐसा लग रहा था मानों उस शेर को मुनिराजों की वाणी का भाव समझ में आ रहा हो। शेर की आंखों से झर–झर आंसू बहने लगे। मानो वह अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहा हो। उसके सारे पाप मानों आसुंओं से बहकर निकल रहे हों।

मुनिराज की मधुर वाणी सुनकर शेर ने मन में प्रायश्चित्त किया – ''अहो! आज मेरा परम सौभाग्य है जो ऐसे मुनिराजों के दर्शन और वाणी का लाभ मिला। ये ही मेरे सच्चे हितैषी हैं''। उसने अपने आत्मस्वरूप का विचार किया '' मैं तो देह से भिन्न चैतन्य स्वभावी अमर तत्व हूँ। मैं तो अनंत गुणों का निधान हूँ'' शांत ..... शांत ..... परम शांत. ..... अहो आश्चर्य! उस शेर को सम्यग्दर्शन हो गया, आत्मज्ञान हो गया और उसके जन्म–मरण का अंत निकट आ गया। वह शेर सम्यग्दृष्टि हो गया। अब उसका मांसाहार बंद हो गया। ''क्या कोई आत्मज्ञानी जीव अपने भोजन के लिये किसी की हिंसा करेगा। नहीं ना। उसने कई दिन तक भोजन नहीं किया। भोजन न मिलने से उसका शरीर कमजोर होता गया। अब वह हिल भी नहीं सकता था। उसे मरा हुआ समझकर कौवे और चील आदि पक्षी उसका मांस खाने लगे। वह इस भाव से भी नहीं हिलता था कि मेरे हिलने से इन्हें भोजन में बाधा होगी और कुछ समय बाद बहुत शांतभाव से उस आत्मज्ञानी शेर की मृत्यु हो गई।

वह शेर मरकर सौधर्म स्वर्ग में सिंहकेतु देव हुआ। देवगति की आयु पूरी करने के बाद वह भरत क्षेत्र में राजा हुआ। राजा की आयु पूर्ण करने के बाद वह पुनः देव हुआ। इस तरह 9 भव के बाद उस जीव ने भरत क्षेत्र के कुण्डलपुर में जन्म लिया। राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशलादेवी के राजमहल में। विवाह नहीं किया। वे बचपन से वैरागी प्रवृत्ति के थे। मात्र 30 वर्ष की आयु में मुनि दीक्षा ले ली और घने जंगल में घोर तप करने लगे और 42 वर्ष की आयु में चार घातिया कर्मों का नाश किया और उन्हें केवलज्ञान हो गया। 30 वर्ष तक अनेक स्थानों में उनका विहार हुआ, उनकी दिव्यदेशना सुनकर अनेक जीवों ने अपना आत्मकल्याण किया और 72 वर्ष की आयु में बाकी बचे चार अघातिया कर्मों का नाश किया और पावापुर से निर्वाण पद प्राप्त किया। वे भगवान महावीर कहलाये। हमारे शासन नायक तीर्थंकर भगवान महावीर। अब वे अनंत काल तक सिद्धशिला में अपनी आत्मा के आनंद में लीन रहेंगे। बच्चो! समझ में आया कि एक पशु भी आत्मज्ञान के बल पर भगवान बन सकता है। हमें भी

जन्म दिवस

ईर्या जिनपथ पर ही चलो, है आगम उपदेश।
सम्यग्दर्शन प्राप्त कर, पहुँचो अपने देश।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर – 27 अप्रेल

जन्म-मरण के अभाव की भावना ही सच्चा जन्म दिन मनाना है।
बर्थ डे क्लब का सदस्य बनिये और जन्म दिवस के पूर्व आप पायेंगे

अनुपम चार उपहार

- आपके नाम पर कविता सहित सुन्दर मोमेन्टो (स्मृति चिन्ह)
- एक सुन्दर धार्मिक ग्रीटिंग
- एक नई वीडियो सी.डी.
- चहकती चेतना में प्रकाशन

शुल्क मात्र 200 रू. (एक वर्ष हेतु)

संपर्क

सर्वोदय ज्ञानपीठ सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल,
जबलपुर 482002 मो. 9300642434, 9373294684
kahansandesh@gmail.com

आप सदस्यता राशि "सर्वोदय ज्ञानपीठ, जबलपुर" के नाम से चैक/ ड्राफ्ट/ मनीआर्डर के माध्यम से अथवा नगद भेज सकते हैं। आप यह राशि "सर्वोदय ज्ञानपीठ, जबलपुर" के पंजाब नेशनल बैंक की बड़ा फुहारा, शाखा के बचत खाता क्रमांक **193000100075883** में जमा करके हमें अपना पूरा पता, फोन नम्बर और जन्मतिथि **S.M.S.** करें।

जन्म दिवस

गाथा से ही ग्रन्थ है, ग्रन्थ हमारी शान।
जैनधर्म की शान से, जीवन बने महान।।
ग्रन्थ गौरव जैन, इंदौर – 7 मार्च
गाथा सौरभ जैन, इंदौर – 7 अप्रेल

चर्चा से समझो निज आतम, आतम रूप महान।
चर्चा प्यारी सी बेटी हो, बनो सिद्ध भगवान।।
चर्चा धर्मेन्द्र जैन, कोटा

अब नहीं खाऊँगा

अरे मधुर! क्या खा रहे हो ? – विज्ञ ने पूछा।
बिस्किट हैं। बड़े स्वादिष्ट हैं। लो तुम भी खाओ ना..
नहीं मैंने बिस्किट खाना छोड़ दिया है।
अच्छा तो .... पंडितजी बन गये हो हा.. हा.. हा.. – मधुर ने विज्ञ का मजाक उड़ाते हुये कहा।
ऐसी बात नहीं है मधुर! बात पंडित बनने की नहीं है।
अच्छा तो ये डेरी मिल्क की चॉकलेट खाओ। ये तो बहुत ही अच्छी है। – मधुर ने चॉकलेट दिखाते हुये कहा।
नहीं दोस्त! मैंनें ये चॉकलेट भी खाना छोड़ दिया है। – विज्ञ ने उत्तर दिया।
अरे तुम्हें ये क्या हो गया है विज्ञ? पहले तो तुम बिस्किट और चॉकलेट के लिये हम लोगों से झगड़ा कर लिया करते थे। आज तुम मना कर रहे हो, क्या संसार से वैराग्य हो गया है? मधुर ने मजाक में कहा।
विज्ञ ने शांत भाव से पूछा – अच्छा मधुर एक बात बताओ। क्या तुम मांस खाते हो ?
क्या बात कर रहे हो ? शुद्ध शाकाहारी हूँ। मैं तो आलू–प्याज भी नहीं खाता और तुम मांस खाने की बात कर रहे हो। – मधुर ने गुस्सा दिखाते हुये कहा।
गुस्सा होने की बात नहीं है। विज्ञ ने कहा – क्या तुम्हें पता है कि तुम जो बिस्किट और चॉकलेट खा रहे हो उसमें मांस है।
मधुर ने हंसते हुये कहा – लगता है तुम पागल हो गये हो। अरे बिस्किट और चॉकलेट में मांस होता है क्या ? और इसमें तो ग्रीन सिम्बाल (हरा निशान) लगा है। इसका मतलब जानते हो शुद्ध शाकाहारी।
मैं भी अब तक इसे शाकाहार समझता था परन्तु .....
परन्तु क्या विज्ञ!..... (मधुर ने बात काटते हुये कहा) रुक क्यों गये...। बताओ ना...। –
विज्ञ ने समझाते हुये कहा – ये देखो! ये 'चहकती चेतना' का नया अंक है। इसमें बताया है कि पारले जी और डेरी मिल्क जैसी वस्तुओं में पशुओं की चर्बी और अण्डा मिलाया जाता है।
वह कैसे? फिर ग्रीन सिम्बॉल का क्या मतलब हुआ ? मधुर ने विज्ञ का हाथ पकड़कर पूछा।
मधुर! भारत सरकार के एक नियम के अनुसार पशुओं की चर्बी (Fat), अण्डा, जानवरों के नाखून और पंखों को शाकाहार माना गया है। पारले जी बनाने वाली कंपनी हिन्दुस्तान एग्रो के लगभग सभी बिस्किट में इन मांसाहार का प्रयोग किया जा रहा है। ये अपने प्रोडक्ट में मिलाये जाने वाली वस्तुओं के साथ ई नम्बर (E-Number) भी लिखते हैं, लेकिन इस ई नम्बर (E-Number) का क्या मतलब है यह नहीं बताते। देखो! 'चहकती चेतना' में ई नम्बर की सूची दी गई, अलग–अलग ई नम्बर का क्या मतलब है ? यह बताया गया है। –विज्ञ ने विस्तार से बताया।
मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा विज्ञ! मधुर ने आश्चर्य से कहा।
मैं भी यह पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया मधुर।
अच्छा मधुर! तुम्हारे पास जो पारले बिस्किट और डेरी मिल्क का जो रैपर है उसमें देखो कि ई नम्बर है या नहीं।
मधुर – (देखकर) – हाँ यार! इसमें तो ई नम्बर (E-Number) है।
और इस ई नम्बर का क्या मतलब होता है यह 'चहकती चेतना' में बताया है। यह सब जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध है।
हे भगवान! तो अभी तक हम मांस खाते रहे ...। – मधुर ने मुंह पर हाथ रखकर कहा।
हाँ मधुर! लेकिन अब ध्यान रखना। वैसे तो बाजार में बनी कोई भी चीज खाने लायक नहीं है। लेकिन यदि कुछ खाओ तो देखकर ही खाना।
सॉरी विज्ञ! मुझे तो तुम्हें थैंक्स कहना चाहिये और मैं तुम्हारा मजाक उड़ा रहा था।
कोई बात नहीं मधुर। और हाँ! थैंक्स चहकती चेतना को दो जिसके कारण कई बच्चे इस भयंकर पाप से बच गये।
थैंक्यू चहकती चेतना।

सावधान! कहीं आपके गले की ठंडक कहीं किसी को प्यासा तो नहीं कर रही ....!

गर्मी का मौसम आ गया है और आपको प्यास बुझाने के लिये पानी के अलावा पेप्सी, कोका कोला, फ्रूटी, मिरन्डा जैसे कोल्ड ड्रिंक्स पीने की इच्छा होती होगी। पर सावधान हो जाइये कहीं आपकी जीभ का आनंद किसी को प्यासा भी मार रहा है।

पहली बात तो पेप्सी आदि पेय पदार्थ अनछने पानी के बने होते हैं। इसलिये हमारे लिये तो अभक्ष्य ही हैं।

दूसरी बात यह कोक और पेप्सिको विदेशी कंपनियां हैं, हर वर्ष ये कंपनियां हमारे भारत देश से अरबों रूपये अपने देश ले जा रहीं हैं इनके पेय पदार्थ पीने का मतलब अपने देश को खोखला करना है। ये कंपनियाँ दुनिया के 200 देशों में व्यवसाय कर रही हैं।

अमेरिका की एक संस्था द्वारा की गई जांच से रिपोर्ट से मालूम चला है कि इसमें मिलाये जाने वाले अमोनिया सल्फाइट कलरिंग के सेवन से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। अमेरिका की कंज्यूमर एडवोकेसी ग्रुप ने इस पर रोक लगाने की मांग की है। यू.एस फूड एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने एक माह पूर्व ही अमोनिया सल्फाइट कलरिंग पर बैन लगाया है। यह केमिकल साफ्ट ड्रिंक बनाने वाली कंपनी द्वारा प्रयोग किया जा रहा था। इन कंपनियों में पेप्सी और कोक जैसी बड़ी कंपनियां भी शामिल हैं।

एक कड़वा सच – भारत के केरल प्रान्त में 44 नदियाँ हैं। इसके पलक्कड़ जिले के प्लाचीमाडा गांव में अमेरिकी कंपनी कोका कोला बीवरेज ने अपने नाम में हिन्दुस्तान जोड़कर 3 जून 2000 को एक बड़ी फैक्ट्री लगाई। इस बड़े प्लांट लगाने के दो साल में ही पूरे गांव के सारे कुयें सूख गये। कुयें जहरीले हो गये, जिसने भी पानी पिया वह बीमार होने लगा। कारण जानने पर पता चला कि यह सब कोका कोला प्लांट के कारण हुआ है। कंपनी अपनी बड़ी मशीनों से प्रतिदिन 10 लाख लीटर पानी जमीन से खींच रही है। इसी गांव की 'मायलम्मा' नामक एक महिला ने गांव की महिलाओं को एकत्र कर 'कोका–कोला विरुद्ध समर समिति' का गठन किया और दो साल के लंबे संघर्ष के बाद मार्च 2004 में अदालत के आदेश के बाद दो संयंत्र में काम बंद हो गया। मायलम्मा की मृत्यु के बाद आज भी प्लाचीमाडा में लोग कंपनी के सामने सत्याग्रह पर बैठे हैं।

ये तो हमने एक गांव की कहानी बताई है। ऐसे कई गांव होंगे जहाँ इन कंपनियों के कारण लोग प्यासे रहने को अथवा बीमार होने को मजबूर होंगे। तो क्या आप मात्र अपने स्वाद के लिये किसी को प्यासा या बीमार देखना पंसद करेंगे – निर्णय आपके हाथ में है।

सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज का महत्वपूर्ण ग्रंथ

पं. प्रवर टोडरमलजी लिखित महान ग्रन्थ

मोक्षमार्ग प्रकाशक

ऑडियो बुक

* सम्पूर्ण ग्रंथ अब आडियो सी.डी. के रूप में
* एक अभूतपूर्व अनुभव के साथ सुनिये
* प्रत्येक शब्द आपको एक नयी अनुभूति देगा
* मात्र 17 घंटो में सम्पूर्ण ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिये

निर्देशन - गौरव शास्त्री, इंदौर ● स्वर - सौरभ शास्त्री, इंदौर

संयोजन - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रतिक्षा करें.... शीघ्र आ रहा है

आचार्य कुन्दकुन्द देव कृत महान परमागम

"समयसार"

अब नवे अनुभव के साथ .....

अब नवे अनुभव के साथ

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा तैयार नई वीडियो सी.डी. आप घर बैठे प्राप्त करें

ग्यारहवां पुष्प

पाठशाला चलें हम

(नये धार्मिक गीतों का संकलन)

बारहवां पुष्प

तुम्हें वीर बनना है

(सुपर हिट गीतों का संकलन)

तेरहवां पुष्प

आओ सीखें जैन धर्म

(तीर्थंकरों और नवदेवताओं का परिचय कराने वाला वीडियो)

चौदहवां पुष्प

शेर बना महावीर

(एनीमेशन वीडियो और रंगीन चित्र सहित पुस्तक)

निर्देशन
विराग शास्त्री, जबलपुर

वितरक
वैशाली कैसेट्स, इंदौर

जन्म दिन, प्रभावना, शिविर आदि प्रसंग पर वितरण के लिये विशेष छूट पर उपलब्ध

- संपर्क -

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com